कुणिंद राजवंश

PART 01

"उत्तराखंड की पहली राजनीतिक शक्ति"

Presented by – M.ME Classes

कुणिंद राजवंश

- कुणिंद राजवंश को उत्तराखंड का पहला राजनीतिक सत्ता माना जाता है।
- इनकी प्रारंभिक राजधानी थी कालकूट —जो आज का देहरादून क्षेत्र है।
- प्राचीन ग्रंथों में इनका उल्लेख विभिन्न नामों से मिलता है:
- पाणिनी ने इन्हें "कुलून" कहा —जो उनके भाषा और क्षेत्रीय पहचान को दर्शाता है।
- कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में इन्हें "कुलिंद" लिखा —जो उनकी राजनीतिक शक्ति को पहचानता है।
- विष्णुपुराण में इन्हें "कुलीनदोपत्यकस" कहा गया —जो इनके कुल और वंश की महत्ता को दर्शाता है।

अभिलेख:

- **अब तक कुणिंदों से जुड़े 5 अभिलेख मिले हैं:**
- **4 अभिलेख भरहुत (मध्य प्रदेश) से।**
- **1 अभिलेख मथुरा (उत्तर प्रदेश) से।**

ये अभिलेख हमें उनके शासन और सांस्कृतिक विस्तार के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं।

मुद्राएँ (Coins) और शासक:

- कुणिंदों की मुद्राएँ मुख्यतः ताँबे की थीं।
- सबसे शक्तिशाली शासक अमोघभूति ने चाँदी की मुद्राएँ भी जारी कीं।
- **मुद्राओं के तीन प्रमुख प्रकार:**
- 1. अमोघभूति प्रकार — अमोघभूति के शासनकाल की प्रमुख मुद्रा।
- 2. अल्मोड़ा प्रकार — अल्मोड़ा क्षेत्र से प्रचलित मुद्राएँ।
- 3. छत्रेश्वर प्रकार — छत्रेश्वर नामक शासक के शासनकाल की मुद्राएँ।

मुद्राओं पर उल्लेख:

- प्रारंभिक मुद्राओं पर केवल 'कुणिंदस्य' (ब्राह्मी लिपि) लिखा था — इसमें किसी राजा का नाम नहीं था।
- बाद की मुद्राओं पर राजाओं के नाम अंकित हुए, जैसे:
- विषदेव, शिवदत्त, मगभत, हरिदत्त, अग्रराज, रावण, भानु।
- ये मुद्राएँ न केवल आर्थिक बल्कि राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक हैं।

साहित्यिक और और धर्म-संबंधी उल्लेख:

- महाभारत (वनपर्व) में कुणिंदों को 'द्विज' कहा गया है — जिसका अर्थ है ब्राह्मण या योग्य व्यक्ति।
- इसी में कुणिंदों के राजा सुबाहु का जिक्र है:
- सुबाहु को पुलिंद राजा कहा गया है।
- उन्होंने पांडवों की ओर से युद्ध लड़ा, जो उनके राजनीतिक और धार्मिक समर्थन को दर्शाता है।

सांस्कृतिक महत्व

- कुणिंद राजवंश उत्तराखंड की प्राचीन राजनीतिक एकता का प्रतीक है।
- इनके अभिलेख और मुद्राएँ आज भी उस युग की सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति की झलक देती हैं।
- 'कुणिंदस्य' नाम और राजाओं के मुद्राओं पर अंकित नाम इस वंश की पहचान को आज तक जीवित रखते हैं।

◆ यह Part 01 है —

“कुणिंद राजवंश” पर हमारी सीरीज़ में अगले भाग में हम जानेंगे इनके समयकाल, धर्म, विस्तार और संस्कृति के बारे में।

Follow us on – Instagram - @m.me.classes

हमें टेलीग्राम पर भी ज्वाइन कर सकते हैं जिसका लिंक इन्स्ताग्राम के बायो में दिया गया है .

यदि आपको इसमें किसी भी प्रकार की त्रुटी नजर आये तो कृपया हमें बताएं |